Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

झारखण्ड प्रदेश में चित्रकला के विकास का एक अवलोकन आधुनिक परिदृश्य मे

Dr. Dharam Pal Singh[1], Dr. Satyendra Kumar[2]

शोध सार

झारखण्ड प्रदेश मे ं जनजातीय चित्रकला का उद्भव एवं विकास कब से आरंभ हुआ यह पता लगाना असंभव है, किन्तु यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त हुए शैलाश्रय एवं भित्ति–चित्रों के साक्ष्य के आधार पर इसे पाषाणकाल से जोड़ा जाता है। सम्पूर्ण झारखण्ड प्रदेश में पाए गए चित्रकला के नमूने अपने विशेष प्रकृति प्रेम को उजागर करती है, तथा पूर्णरूप से पर्यापरण संरक्षण को परिभाषित करती है, जिसका वर्तमान समय में काफी महत्व है। इस प्रदेश की प्राचीन चित्रकला शैली जादोपटिया, सोहराय, कोहबर शैली है, जो की प्रायः लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी है। हमारे देश के अन्य राज्यों की भाँति इस राज्य की चित्रकला शैली को पहचान नहीं मिल पाया है। बिहार प्रान्त से अलग होने के उपरांत अपने अस्तित्व को उजागर करने में यह प्रदेश धीरे–धीरे सफल हो रहा है। विभिन्न संस्थाएँ तथा सरकार द्वारा इसे संरक्षित और सुरक्षित किए जाने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में झारखण्ड प्रदेश की चित्रकला शैली के महत्व को आधुनिक संदर्भ में जोड़ कर देखने की कोशिश की गयी है।

मुख्य शब्द

शैलचित्र, चित्र दीर्घा, शैल फलक, जादोपटिया, वैद्यनाथ शैली, अरिपन चित्र

ISSN: 3049-0278 (Online)
Crossref doi
DOI (Crossref)Prefix: 10.63431
AIJITR - Volume - 3, Issue - II, Mar-Apr 2026

Copyright © 2026 by author (s) and (AIJITR). This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

भूमिका

झारखण्ड प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता के साथ–साथ अनेकता मे ं एकता का दर्शन यहाँ की चित्रकला की भी विशिष्टता है। झारखण्ड में चित्रकला के उद्भव, विकास, उसकी विशिष्टता एवं विविध शैलियों के संदर्भ में 'साक्ष्य' के रूप में 'झारखण्ड के कला परिदृश्य भाग में बुलु इमाम, डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा, नीलिमा और मिल्ड्रेड आर्चर द्वारा लिखित आलेखों को प्रस्तुत किया जाता है। इनमें झारखण्ड में पाई जाने वाली एवं प्रचलित विभिन्न चित्र कलाओं – शैल–गुफा चित्र, काष्ट चित्र, भित्ति चित्र, पट्ट चित्र अथवा जादो पटिया, अरिपन चित्र प्रतीक चित्र, गोदना चित्रकला आदि का विस्तृत वर्णन है। अनेक देशी–विदेशी विद्वान और शोधकर्ता इन क्षेत्रों का भ्रमण, अध्ययन एवं अन्वेषण कर यहाँ की गुफाओं में बने शैल चित्रों को विश्व की प्राचीनतम शैल चित्रों के रूप में चिह्नित किया है। यह पूरा क्षेत्र हजारीबाग जिले के उतरी–पूर्वी भाग में दामोदर नदी की घाटी में अवस्थित बड़कागाँव प्रखण्ड की सति पहाड़ी श्रृखंला में अवस्थित है। झारखण्ड में चित्रकला अथवा लोक चित्रकला की परम्परा गुफा काल के आदि मानव से लेकर इस इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक मानव अथवा अत्याधुनिक मानव के बीच किसी न किसी रूप में जीवित है। झारखण्ड में पारम्परिक लोक चित्रकला को जीवित रखने और उन्हें आधुनिक सन्दर्भ में विकसित कर प्रस्तुत करने का कार्य काफी समय से यहाँ चित्रकारों द्वारा जाता रहा है। प्रस्तुत आलेख में कतिपय चित्रकारों एवं उनकी कृतियों अथवा चित्रकला के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि को प्रकाश में लाने का प्रयास है।

झारखण्ड क्षेत्र में चित्रकला की पहचान एवं विकास

1 Research Scholar, Bir Tikendrajir University, Manipur.
2 Assistant Professor, Department of Fine Art, Bir Tikendrajir University, Manipur.

DOI Link (Crossref) Prefix: https://doi.org/10.63431/AIJITR/3.II.2026.252-258
AIJITR, Volume 3, Issue –II, March - April, 2026, PP.252-258
Received on 30th March, 2026 & Accepted on 21st April, 2026, Published: 30th April, 2026

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

झारखण्ड की इस प्राचीनतम एवं प्रागैतिहासिक काल की धरती पर वनमानुष या आदिमानव के निवास करने के अनेकों मेगालिथिक एवं पुरातात्विक अवशेष विभिन्न क्षेत्रों में मिले हैं। विशेषकर दामोदर एवं बराकर नदियों की घाटी में अवस्थित पहाड़ी श्रृंखलाओं की गुफाओं में उस प्राचीनतम मानव के शैलाश्रयों में अनेक चित्र मिले हैं। इन शैल चित्रों ने पुरात्विदों, मानव–वैज्ञानिकों और कला मर्मज्ञों को अपनी ओर आकर्षित किया है। हजारीबाग जिला मुख्यालय से 45 कि.मी. दूर बड़कागाँव की घाटी में, 'इसको' नामक ग्राम के समीप असवारा पहाड़ी – श्रृंखला की सती पहाड़ी पर, नाग छत्र की आकृति वाली शैल–दीर्घा में सांकेतिक चित्र–लिपि की शैली में अंकित गुफा–चित्रों का प्रकाश में आना एक महत्वपूर्ण खोज है। वह शैल–फलक, जिस पर ये चित्र अंकित किये गए हैं, 500 फुट से भी अधिक लम्बा है। इसके ऊपर ही 100 फुट लम्बा और 26 फुट ऊँचा सावधानी पूर्वक खैरी सतह पर बड़ी मात्रा में चित्र उकेरे गए है। इन चित्रों में आदमी, गाय, हिरण, खरगोश, नदियाँ, सूरज, ईश्वर आदि के चित्र अंकित हैं। इन चित्रों के अतिरिक्त सांकेतिक चित्र–लिपि भी अंकित है, जिनमें कुछ संदेश अन्तर्निहित है। ये सुघड़ आकृतियाँ रक्तिम लौह–अयस्क (हेमाटाइट) को कूट–पीसकर तैयार किये गये रंग से रंगा हुआ भी है। चित्रों में कहीं–कहीं चूने (अथवा पत्थरों से ही निर्मित सफेद रंग) का भी प्रयोग किया गया है। इस गुफा चित्र दीर्घा की खोज का सारा श्रेय 'इण्डियन नेशनल ट्रस्ट ऑफ कल्चरल हेरिटेज के क्षेत्रिय संयोजक श्री बुलु इमाम को है, जिन्होंने आस्ट्रेलियाई मिशन के पादरी फादर टोनी हर्बर्ट की सूचना के आधार पर इसकी खोज की। श्री इमाम के अनुसार –'इसको' ग्राम में प्राप्त इन गुफा–चित्रों की आकृतियाँ मोहनजोदड़ो (2800 ई० पूर्व से 2500 ई० पूर्व) में प्राप्त शीलों की आकृतियों के समान है।

स्थानीय लोग 'चित्र दीर्घा' को 'कोहवर' और दूसरी गुफा को 'मड़वा दुआर' अथवा 'मड़वा तरी' कहते है। हजारीबाग के अलावा राहम, मण्डेर, सतपहाड़ और देहांगी में जो की उतरी कर्णपुरा घाटी में है शैल चित्र प्रकाश में आए हैं जो 'इसको' में प्राप्त शैल चित्र की ही श्रृंखला के हैं। हजारीबाग जिले में स्थित इन शैल–चित्रों की तुलना विएना (ऑस्ट्रिया) के सुविख्यात भारतीय रॉक आर्ट विशेषज्ञ इरविन न्यूमायर ने सुन्दरगारखण्ड में चित्रकला अथवा लोक चित्रकला की परम्परा गुफा काल के आदि मानव से लेकर इस इक्कीसवीं सदी के वैज्ञानिक मानव अथवा अत्याधुनिक मानव के बीच किसी न किसी रूप में जीवित है। झारखण्ड प्रदेश के चित्रकला को दो भागों में बाँटा गया है ।

1 संथाल परगना के चित्र

2 छोटा नागपुर के चित्र

1 संथाल परगना के चित्र मे प्राचीनता, आकार की प्रधानता चित्र के उभार, आदि विशेषताएँ हैं। रंगो में सफेद, नीला, लाल, एवं काला की प्रमुखता रहती है।

2 छोटा नागपुर के चित्र में आधुनिकता, रंग की प्रधानता चित्र समतल होता है, रंगों मे सफेद, नीला, हरा, काला, पीला का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रदेश की प्रमुख चित्रकला शैली 'कोहबर' एवं 'सोहराय' है दोनों ही शैलियाँ भिति चित्रकला (दीवार पर चित्रित होने वाली) है। जिसमें 'कोहबर' चित्रों का निर्माण वैवाहिक अवसर पर वर–वधू के लिए किया जाता है, जबकि सोहराय कृषि चक्र का चित्रण से सम्बन्धित है। इसके अतिरिक्त विविध जनजातीय चित्रकला के लिए संथाल परगना की संथाल जनजाति के लोग काफी जागरूक एवं प्रवीण माने जाते हैं। डॉ. के.सी. टुडू ने यहाँ की विविध लोक चित्रकलाओं का अध्ययन एवं आलेखन का कार्य किया है। उन्होंने संथाली लोक चित्रकला की विशिष्ट शैलियों का वर्णन अपने एक आलेख में किया है।

- ♦भिति चित्रकला
- ♦ खोंड़
- ♦ चित्रकला
- ♦ दाग चित्र
- ♦ जादोपटिया चित्र
- ♦ गोदना कला इत्यादि।

झारखण्ड के हजारीबाग, गढवा, राँची, कोडरमा एवं गिरिडीह आदि कुछ जिलों में भी शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। जिसके खोजकर्ता हैं।

हजारीबाग – बुलु इमाम (पद्मश्री सम्मानित)
गढवा – डॉ. राकेश तिवारी
राँची – डॉ. बिन्दुला जायसवाल

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

गिरिडीह – डॉ. ए. के. प्रसाद
'कोहबर' एवं 'सोहराय' चित्रकला की भाँति ही संथाल परगना में जादोपटिया चित्रकला भी काफी प्रचलित थी जो अब लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी है। जादोपटिया चित्रकला भारत में प्राचीन काल से चली आ रही है। इस चित्रकला को ग्रामीण चित्रकला माना गया है और इसके चित्रकार 'जादो' या 'जादोपटवा' कहलाते हैं, जो हिन्दु की एक विशेष जाति के होते है। इस चित्रकला के विषय वस्तु धार्मिक है जिसमें मृत्यु के देवता यम या यमराज के द्वारा मृत्यु के बाद प्राणियों को उनके कर्मानुसार मिलनेवाले पुरस्कारों या दण्डों की चित्रात्मक सूची या विवरण रहता है। इस चित्रशैली का उद्भव बंगाल से माना जाता है, जिसका प्रचलन आज भी है। यह पट्टचित्र कभी रामायण और महाभारत की कथा को कपड़ा पट्टचित्र के रूप में बनाया जाता था। यह पट्टचित्र लेकर 'जादो' गाँव–गाँव घूमकर किसी संथाल की मृत्यु के अवसर पर विशेष रूप से मृतक के परिवार को दिखाकर तथा सम्बन्धित धर्मगाथा को सुनाकर दान दक्षिणा लेते है। मिल्ड्रेड आर्चर जादोपटिया चित्रशैली की विशेषज्ञ मानी जाती हैं। संथाल परगना में जादोपटिया चित्रकला जैसी प्राचीन एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से युक्त लोक चित्रकला शैली को संरक्षण देने एवं गुणात्मक पोषक देने का कार्य दुमका के युवा चित्रकार मीनू आनन्द और आर० के० नीरद द्वारा प्रदर्शनी लगाने सर्वेक्षण तथा संग्रहण करने का कार्य आदिवासी चित्रकला, अकादमी के बैनर तले 1994 से किया जा रहा है। हजारीबाग के निवासी और 'इन्टैक' संस्था के प्रभारी बुलू इमाम और उनके सहयोगी जस्टीन इमाम ने असवारी पहाड़ी श्रृंखला एवं सती पहाड़ी के विस्तृत क्षेत्र में फैली गुफाओं के शैलचित्रों का गहन सर्वेक्षण किया। श्री इमाम ने हजारीबाग के शैलचित्र कला के साथ–साथ कोहबर, सोहराय तथा अन्य लोक चित्रकलाओं को विषय बनाकर एक पुस्तक की रचना अंग्रेजी में की है जिसका शीर्षक 'रॉक आर्ट ऑफ नार्थ झारखण्ड' है। भारत के अलाव आस्ट्रेलिया, लन्दन (इंग्लैंड), जर्मनी, जेनेवा आदि नगरों में यहाँ की चित्र प्रदर्शनी के रूप प्रदर्शन कर झारखण्ड के साथ–साथ भारत का भी नाम रौशन किया है। आधुनिक परिदृश्य में झारखण्ड प्रदेश में एक नयी चित्रकला बैद्यनाथ पेंटिंग के रूप में उभर रही है। बैद्यनाथ पेंटिंग का केन्द्र झारखण्ड की सांस्कृतिक राजधानी देवघर है, जहाँ बाबा बैधनाथ का विश्व प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिर है। इस चित्रकला शैली का नामकरण बैद्यनाथ शैली रखने का आधार सृजन स्थल, संदर्भ, विषय और इसके प्रतीकों का सांस्कृतिक शास्त्रीय मूल्य है। बैधनाथ पेंटिंग के विषय बाबा बैद्यनाथ मंदिर, वहाँ की पूजा पद्धति, शास्त्रीय एवं लोक कथाओं एवं मान्यताओं, मंदिर से जुड़े धार्मिक तांत्रिक कर्मकांडो एवं गतिविधियों तथा वहाँ संपन्न होने वाले संस्कारों पर केन्द्रित है। बैद्यनाथ पेंटिंग को विकसित करने में चित्रकार नरेन्द्र पंजियारा लगे हुए है।

समसामयिक कला परिदृष्य की समस्याएँ

संरक्षण एवं प्रोत्साहन का अभाव– झारखण्ड कला में विभिन्न स्तरों पर संरक्षण एवं प्रोत्साहन रूपी गतिविधियों का अभाव नजर आता है, जिससे यह कला अपना मूल अस्तित्त्व खोती जा रही है।

युवा वर्ग की उपेक्षा– समसामयिक कला परिदृष्य में युवा कलाकारों को उचित प्रोत्साहन न मिलने के कारण युवा वर्ग कलाकार स्वयं को उपेक्षित महसूस करता हुआ नजरआता है।

समष्टिगत अभाव–कला जगत् में कलाकार समष्टिगत कला पहचान बनाने से दूर, व्यक्तिगतमौलिकता की ओर अधिक अग्रसर दिखाई देते हैं।

कला विचारों से संवाद का अभाव एवं कला समीक्षकों की कमी –कला क्षेत्र में वरिष्ठ एवं युवा कलाकारों के मध्य कला विचारों के संवाद नके बराबर हैं, जिससे कला में परम्परागत एवं नवीन विचारों के समन्वय का आभास प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त कलाकारों के कृतित्व पक्ष के मूल्यांकनहेतु कला समीक्षकों की कमी भी बड़ी समस्या के रूप में नजर आती है।

हिन्दी भाषा में कला सम्बन्धी लेखन का अभाव–कला जगत् के व्यापक क्षेत्र में हिन्दी साहित्य में उपलब्ध कला सम्बन्धी सामग्री का अभाव है, क्योंकि कला समीक्षकों एवं कलाकारों द्वारा कला सम्बन्धी विषयों पर हिन्दी भाषा में साहित्य एवं संवाद न के बराबर रहे हैं।

प्रयोगधर्मिता की अनदेखी– वर्तमान में नवीन प्रयोगधर्मी कला और कलाकारों के मध्य संवाद न के बराबर नजर आते हैं, जिससे कला दर्षक उनके कला विचारों और संवेदनाओं को समझने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

वैष्वीकरण, शहरीकरण एवं बाजारीकरण–बाजारीकरण की लालसा से परिपूर्ण कुछ कलाकार वैष्वीकरण, शहरीकरण के पीछे भागते हुए अपने विचारों को कला में अभिव्यक्त कर रहे हैं, जिससे अर्थहीन कला का सृजन बढ़ता जा रहा है।

कला जगत् एवं शोधार्थियों के मध्य संवादहीनता–कलाकारों एवं शोधार्थियों के मध्य कला विषयों की संवादहीनता बड़ी समस्या है, जिससे कला विद्यार्थी एवं शोधार्थी कला के महत्त्वपूर्ण ज्ञान से अनभिज्ञ रहते हैं।

नकली कला का बढ़ता बाजार–समसामयिक कला जगत् परिदृष्य में कला की अनमोल कलाकृतियों में असल के साथ नकल की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और इसके बढ़ने का मुख्य कारण कला बाजार ही है।

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ ✉ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

संग्रह एवं प्रदर्षन के मंच की समस्या–कला दीर्घाऐं सिर्फ जाने–माने बड़े कलाकारों की कला को महत्ता देते हुए अपने यहाँ संग्रहित और प्रदर्शित करती हैं, जिससे युवा कलाकारों के उत्साह को ठेस लगती है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व की समस्याएँ –लगभग हर जगह कलाकारों के पुरस्कार और सम्मान सम्बन्धी व्यक्तित्व के बारे में लिखा जाता है, परन्तु उनके कलात्मक संसार के माध्यम एवं तकनीकी पक्षों पर विचार गौण होते हैं। कई कलाकारों ने बोला है कि वर्तमान में डिजिटलाईजेषन कलारूप होने से कला में, कला तत्वों के अभाव में कला का स्तर गिरता जा रहा है, जबकि अनेक कलाकारों ने इस बात को नकारा है।

समसामयिक कला परम्परा में विकास के सुझाव

झारखण्ड का कण–कण कला विचारों से परिपूर्ण नजर आता है, जो समय–समय पर विभिन्न अवस्थाओं एवं स्वरूपों द्वारा कलाकारों को सृजन हेतु प्रभावित करता है। यहाँ कलाकारों के कलासंसार में कला विविधता के दर्षन होते हैं, जिनकी महत्ता बढ़ाने एवं महत्त्वपूर्ण योगदान हेतु कला की उन्नति एवं विकास के लिए निम्नांकित तथ्यों की ओर ध्यान देकर विभिन्न उपायों को अपनाना होगा।

कला को जनसमूह तक पहुँचाना –झारखण्ड की कलाओं के प्रचार–प्रसार हेतु एवं जनमानस को कला से जोड़ने के लिए कलाकारों और कला समीक्षकों द्वारा कला पर साप्ताहिक कला स्तम्भ लेखन प्रक्रिया प्रारम्भ करवाई जा सकती है, जिससे कला संबंधी गतिविधियों का प्रचार–प्रसार होगा और आमजन से कला को जोड़ने में भी मदद मिलेगी।

झारखण्ड सरकार के ललित कला संस्थानों द्वारा युवा कलाकारों के लिये विषिष्ट योजनाएँ क्रियान्वित करना–सरकार द्वारा कला क्षेत्र में युवा कलाकारों को प्रोत्साहित किया जानाचाहिए एवं उनके लिये विषिष्ट कला योजनाओं का आयोजन करवाना चाहिये,जिससे युवा कलाकार दोगुनी क्षमता से अपनी कला–कौशलता का परिचय देने में स्वयं को सक्षम महसूस करें।

संरक्षण एवं संवर्द्धन–कला दीर्घाओं को आगे आना चाहिए आरै युवा कलाकारों की श्रेष्ठकलाकृतियों का संग्रह करना चाहिए, जिससे कला संरक्षण एवं संवर्द्धन में बढ़ोतरीहोगी। इसके अतिरिक्त ललित कला अकादमी द्वारा समय–समय पर कला प्रदर्शनियों का आयोजन करवाया जाना चाहिए, जिससे अनेक कलाकारो ं के कृतित्व को उनके माध्यम एवं तकनीकी पक्षो ं की दृष्टि हेतु देखा आरै समझा जा सके।

कला मंचों की सक्रिय व्यवस्था–वरिष्ठ कलाकारों द्वारा युवा कलाकारों के लिये समय–समय पर कला विचार गोष्ठियाँ आयोजित करवाना, प्रोत्साहन करना एवं श्रेष्ठ कला मंचों की सक्रिय व्यवस्था करवाना भी ठोस आधार होगा।

नकली कला बाजार पर रोक –कला में असल–नकल के बढ़ते कला बाजार पर भी रोक लगाने कीआवश्यकता है। तकनीकी तौर पर कलाकार अपनी कलाकृतियों में कुछ ऐसा करेंकि असली–नकली की पहचान कर, वह स्वयं कला कार्य को कुषलतापूर्वक करने में सक्षम हो।

कला एवं समाज में समन्वय –समाज में कलाकार को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए। कला समाज का प्रतिबिम्ब है, जिसे कलाकार अपनी कृतियों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। कला में समकालीन घटनाओं का प्रभाव प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से निहित होता हैं, क्योंकि कलाकार समाज की अनेक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। चूंकि कलाकार वह कड़ी है, जो कला और समाज को आपस में जोड़ती है।

आमजन में कला के प्रति आकर्षण–एक कलाकार का काम केवल कला रचना करने तक ही सीमित नहीं होता,बल्कि आमजन में कला के प्रति आकर्षण पैदा करके, कला दर्शकों को अपनीकला से जोड़ना अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। कलाकार के लिए अपनी भावनाओं कोकिसी भी माध्यम में अभिव्यक्त कर समाज के मध्य पहुँचाने का सबसे श्रेष्ठ माध्यमकला प्रदर्शनियाँ हैं। कलाकारों द्वारा अपनी कलाकृतियों को आम जनता के बीच प्रदर्शित करना चाहिए, ताकि आम जनता भी कला से जुड़ सके।

कला जगत में नकारात्मक पहलूओं पर कानून व्यवस्था–सरकार द्वारा क्षेत्र में फैले हुए विभिन्न नकारात्मक पहलूओं पर कानूनबनाये जाने की आवश्यकता है। कलाजगत की विभिन्न समस्याओं से निपटने केलिए सरकार द्वारा ठोस कदम उठाये जाने चाहिए और कला को संरक्षित करके, भावी कला पीढ़ी को ठोस आधार देना चाहिए।

समसामयिक कला परम्परा की उपादेयता एवं सम्भावनाएँ

झारखण्ड की समसामयिक कला की उपादेयता मात्र कला जगत के लिए ही नहीं वरन् अन्य विषयों के लिए भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण होंगी, जितनी की अन्य विषयों की जानकारी। उपयोगी होने की दषा, अवस्था एवं योग्यता निष्चित रूप से किसी आवष्यकता से पूरा करने की क्षमता से सम्बन्ध रखती है। यहाँ उपयोगिता शब्द का अभिप्राय कला से मिलने वाली वह संतुष्टि है जो कलाकार, समाज एवं दर्षक की आवष्यकताओं की पूर्ति करती है। अतः रचनात्मक आवष्यकताओं की पूर्ति से माप सम्बन्ध, सम्पूर्ण इकाई से आनन्द एवं रचना की समग्रता से सन्तुष्ट करने की क्षमता रखती है, जिससे

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

Volume – 3 | Issue – II | Mar-Apr 2026 | ISSN: 3049-0278 (Online)

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

रचनात्मकता का न केवल महत्त्व पता चलता है, वरन् विविध अवधारणाओं के साथ उसके मूल्यांकन में भी सहायता मिलती है।

झारखण्ड के समसामयिक कला के माध्यम एवं तकनीकी प्रतिमानों काविकास एवं युगानुरूप अविरल धारा न केवल कला विद्यार्थी, कलाकारों, कला कीविविध विधाओं, कला के सह सम्बन्धों, ललित कला के अंतःतात्विक सम्बन्धों कीसमन्वयात्मक परम्परा के लिए भी यह शोध उपादेय सिद्ध होगा। साथ ही साथइतिहास के लिए भी एक ऐतिहासिक दस्तावेज और समग्र प्रलेखन रूप भी सिद्धहोगा। राजस्थान की समसामयिक कला इतिहास में विविध कला माध्यमों एवंतकनीकी स्वरूपों की नवीन कड़ी के रूप में जहाँ एक ओर यह शोध सार्थक होगावहीं दूसरी ओर रूचि–अभिरूचि के साथ नई दृष्य भाषा, नया रूप, नये प्रतिमानही सृजनात्मक अभिव्यक्ति में होने की अनेक सम्भावनाएँ हैं।

राजस्थान की कला का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य

प्रस्तुत शोध में राजस्थान की कला शैलियों और राजस्थान की कला केक्रमिक विकास में सहायक आधार स्तम्भ रूपी कलाकारों का वर्णन किया गया है।इससे राजस्थान की कला का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य जानने में कला विद्यार्थियों औरकला में रूचि रखने वाले लोगों के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रलेखन व्यवस्था

कलादृष्टि से गौरवशाली रंगीले राजस्थान की कला परम्पराओं औरसमसामयिक कला में विद्यमान अनेक कलाओं (मूर्तिकला, चित्रकला, छापाकला,डिजिटल कला और फोटोग्राफी कला आदि) का अध्ययन करके प्रकाश डाला गयाहै, जिससे आगामी शोधार्थियों के अध्ययन में यह शोध उपयोगी रहेगा।

माध्यम की नवीन संभावनाएँ

वर्तमान समय में झारखण्ड की समसामयिक कला में नवीन संभावनाएँनजर आती हैं, जिसमें मूर्तिकला, चित्रकला, छापाकला, फोटोग्राफी कलाट्रायोग्राफी, होलोग्राफी एवं सैण्ड आर्ट आदि विषेष रूप से प्रमुख हैं।

तकनीक की नवीन संभावनाएँ

समसामयिक कलाकारों ने किसी विशेष कला माध्यम में स्वयं को सीमित नकरके विविध माध्यमों एवं तकनीकों में अपने सौंदर्यपूर्ण कलामय विचारों कोअभिव्यक्त किया है। कलाकार कला अभिव्यक्ति हेतु नवीन माध्यमों, तकनीकों एवंकला सामग्रियों से कलाकृतियाँ निर्मित कर, कला पारखियों का ध्यान अपनी ओरआकर्षित करने में सफल रहे हैं। डिजिटल और फोटोग्राफी माध्यम द्वारा कम समयमें कलारूप (कलाकृतियाँ) निर्मित किये जा सकते हैं और निर्मित कलारूप सेअनेक प्रतिलिपियाँ भी तैयार की जा सकती हैं। राजस्थान के कलाकार आकाषचोयल के द्वारा ट्रायोग्राफी में एवं पेपर मेषी में भी वीरेन्द्र शर्मा, मंजू शर्मा एवं प्रेमनारायण कुमावत आदि ने नवीन सम्भावनाएं खोजी हैं।

माध्यम एवं तकनीकी प्रतिमान की प्रयोगधर्मिता

झारखण्ड की समसामयिक कला के माध्यम एवं तकनीकी प्रतिमान :कलाकारों के संदर्भ में, प्रस्तुत शोध में कलाकारों की कला के विषय केसाथ–साथ उनके माध्यम एवं तकनीकों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया गया है, जोकलाजगत के प्रयोगात्मक पक्ष के तकनीकी ज्ञान के अभाव की पूर्ति करेगा।

माध्यम एवं तकनीकी प्रतिमानों के प्रलेखन एवं प्रकाषन

एक कलाकार के लिए कला का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वह कला केजरिये अपने जीवन के अनुभवों की अभिव्यक्ति विभिन्न नवीन माध्यमों से करता हैतथा तकनीकी प्रतिमानों के नवीन रूप को भी प्रकाषित करने में अहम् भूमिका निभाता है।

कलाकारों के विचार एवं सार्थक अभिव्यक्ति

झारखण्ड के समसामयिक कलाकारों के व्यक्तित्व और कृतित्व सृजन मेंनिहित भावों, संवेदनाओं और रचनाशीलता के सरोकारों के साथ–साथ कलारचनाओं के समग्र परिप्रेक्ष्य पर भी प्रकाश डाला गया है।

परम्परा और आधुनिक परिवेष में नवीनता का समन्वय

कलाकार ही कला और समाज (आमजन) के मध्य सेतू का कार्य करता है।देखा जाये तो कला, समाज से सही मायनों में जुड़ी हुई प्रतीत होती है, क्योंकिअगर कलाकार कलाकृतियों में अपने देवी–देवताओं का निर्माण नहीं करता तो आमजन भगवान के दर्शन नहीं कर पाती। भगवान की कल्पनामय कलाकृतियाँ या मूर्तियाँ कलाकारों द्वारा ही निर्मित की गई, जिसे आम जनता ने भी स्वीकारा है।कला परम्परा का नये संदर्भों और उसके रूपान्तरण को राजस्थान कीसमसामयिक कला–प्रवृत्तियों के साथ समन्वित कर नवीनतापूर्ण कला को प्रदर्षितकिया गया है।

परस्पर संवाद एवं प्रस्तुतीकरण

झारखण्ड की समसामयिक कला में परस्पर संवाद, प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्षनकी अद्वितीय अभिव्यक्ति नजर आती है। कलाकार अपनी कला में अरूप विचारोंद्वारा रूप (आकृति) का सृजन करता है। वर्तमान समय में विज्ञान और कलाओं केसमन्वय द्वारा

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

Volume – 3 | Issue – II | Mar-Apr 2026 | ISSN: 3049-0278 (Online)

Amitrakshar International Journal
of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
(A Social Science, Science and Indian Knowledge Systems Perspective)
Open-Access, Peer-Reviewed, Refereed, Bi-Monthly, International E-Journal

कलाकार अपने विचारों को कलाकृति रूप में प्रस्तुतीकरण करकेकला को नए आयाम दे रहा है। जबकि लगभग हर जगह कलाकार की कलात्मकसंवेदनाओं की उपेक्षा करते हुए, उनके व्यक्तित्व (सम्मान और उपलब्धियों) परध्यान केन्द्रित कर लिखा जाता है। परन्तु प्रस्तुत शोध में उपरोक्त सभी बिन्दुओं केसाथ–साथ उनके कृतित्व पक्ष के माध्यम एवं तकनीकी पहलूओं पर भी प्रकाशडाला गया है। इसलिए इस पक्ष के कारण इसकी उपयोगिता कला क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रहेगी।

हिन्दी भाषा में कला की प्रस्तुति

कला से संबंधित लोगों को इस शोध से अवश्य सहायता मिलेगी, क्योंकिइसमें विभिन्न कलाओं के ,माध्यम एवं तकनीकी पक्षों के साथ–साथ कलाकारों केव्यक्तित्व और कृतित्व को हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

सम्भावनाएँ

- कलाकार की कला में ऐसी शक्ति होनी चाहिए कि वह लोगों को संकीर्णसीमाओं से ऊपर उठाकर सोचने समझने की नवीन शक्ति प्रदान करे।
- समसामयिक परिदृश्य में कलाकारों की तकनीक नित नवीन दिन ब दिनबदल रही हैं। कलाकार अपनी कला में नवीन तकनीकों का प्रयोग करतेहुए कलाकृतियों का सृजन करता है, जिससे उसकी कला में नयेकलात्मक बदलाव (संप्रेषण) आते हैं। इसलिए समसामयिक कलाकारों केकलात्मक पक्ष में तकनीकी और प्रयोगधर्मिता के सम्बन्ध में भी सम्भावनाओं का अनंत आकाश नज़र आता है।
- नवीन माध्यमों और तकनीकों द्वारा कलाकार अपनी अन्तःदृष्टि के अन्तर्गतरचनात्मक ऊर्जा को नया रूप देता है, जिसके कारण कलाजगत में नितनये–नये माध्यमों एवं तकनीकों में कला सृजन को देखना सुखद है। आनेवाले समय या भविष्य में इस कलात्मक सुखद अहसास के बढ़ने की ओर भी प्रबल सम्भावनाएँ नज़र आती हैं।
- झारखण्ड की कलाओं के प्रचार–प्रसार हेतु और कलाओं को जनमानस सेजोड़ने के लिए कलाकारों एवं कला समीक्षकों द्वारा कला पर साप्ताहिककला स्तम्भ लेखन प्रक्रिया प्रारम्भ करवाई जा सकती है।
- झारखण्ड कला को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर भविष्य में औरऊँचाईयों को छूने की प्रबल सम्भावनाएँ दृष्टिपात होती हैं।
- विज्ञान आरै टेक्नोलाजीं में नित नए–नए आविष्कारों के फलस्वरूप हमारेरहन–सहन, सोच विचार के साथ–साथ कला भी विशेष रूप से प्रभावित कररही है। कलाकार ने प्रारम्भिक कला गुहा चित्रण से लेकर विभिन्न कलाशैलियों से होते हुए, वर्तमान समय मे ं विज्ञान आरै टेक्नोलाजीं में भी अपनेकलात्मक रचना संसार के मोतियों रूपी कला को पिरोया ह ै कलाकार केइसी उत्सुकता, प्रयोगधर्मी आरै जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण, अभी भी कला मे ंअनेक अद्भुत सुखद आश्चर्यों की पूर्ण सम्भावनाएँ नज़र आती ह ै
- परम्परागत कला के सम्बन्ध में आज की नई पीढ़ी की धारणाएँ, पुरानीपीढ़ी से बिल्कुल अलग हैं। आज की युवा पीढ़ी बनी बनाई लीक (शैली) सेहटकर प्रयोगधर्मिता को अधिक महत्ता देती हैं, जो हमें उनकी कला में भीदेखने को मिलता है। युवा कलाकारों और कला समीक्षकों के अनुसार कलामें परिवर्तन समय के अनुसार, पहले भी होता रहा है और आगे भी यह प्रक्रिया निरन्तर गतिमय रहेगी।

निष्कर्ष

अतः झारखण्ड प्रदेश अपनी कलात्मक विशेषता में अन्य राज्यों से कमतर नहीं है। यहाँ प्राचीनकाल के शैलचित्र, जो सिन्धुघाटी सभ्यता से मिलते–जुलते हैं से लेकर कोहबर, सोहराय, जादोपटिया चित्रकला के साथ–साथ आधुनिक विकसित चित्रकला बैद्यनाथ पेंटिंग के रूप में हमारे समक्ष है। सभी कलाओं की अपनी विशेषता है लेकिन चित्रकला मानवीय भावनाओं को प्रकट करने का स्पष्ट माध्यम है, जिसमें निश्छलता सादगी, प्रेम एवं अध्यात्म सभी समाहित होता है। उत्साह, खुशी, दुःख इन सभी का सम्मिश्रण हमारे झारखण्ड प्रदेश की चित्रकला में स्पष्ट रूप से उजागर होती है, जिसे और परिष्कृत करने का प्रयास जारी है।

संदर्भ सूची

1 बीरोतम, बी., (2001), झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना। 2 पागल, अशोक, (2007), पुरातत्व और इतिहास का झारखण्डी धरोहर, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 63।
3 अनुज, भुवनेश्वर, (2001), छोटानागपुर के प्राचीन स्मारक, नागपुरी संस्थान, रांची, पृ० सं० 75।
4 तिवारी, राजकुमार, (2006), झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन प्रकाशन, रांची।
5 सिंह, सुनील कुमार, (2016), झारखण्ड परिदृश्य, क्रॉउन पब्लिकेशन।
6 सिन्हा, आदित्य प्रसाद, (2014), तुलिका झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला, दिल्ली, पृ. सं. – 19।

Published by: Amitrakshar Publishers – Amitrakshar International Journal of Interdisciplinary and Transdisciplinary Research (AIJITR)
https://www.amitrakshar.co.in/journal/ : editor@amitrakshar.co.in DOI (Crossref) Prefix: 10.63431

7. श्री सत्यनारायण लाल 1970, अभिनव शिक्षाशास्त्रः, बुनियादी साहित्य मंदिर, पटना,नवीन संस्करण ।
8. डॉ० जे० डी० जैन, 1977 आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तनः एस चन्द एण्ड कंपनी लिमिटेड, रामनगर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण ।
9. राम नरेश त्रिपाठी, कविता कोमुदी, नवनीत प्रकाशन लि0 बम्बई ।
10. वात्सायन (जयमंगल टीका) ईगल पाकेट बुक्स, कामसुत्रः, गाजियावाद ।
11. देवेन्द्र सत्यार्थी 1948, धरती गाती हैरू, राजकमल प्रकाशन लि0, दिल्ली सं० ।
12. देवेन्द्र सत्यार्थी 1948, धीरे वही गंगाः, राजकमल प्रकाशन लि0, दिल्ली सं० ।
13. देवेन्द्र सत्यार्थी 1948, बेलो फूले आधी रातः, राजकमल प्रकाशन लि0, दिल्ली सं० ।
14. डॉ0 श्याम लाल कौशिक एवं कृष्ण गोपाल, तुलनात्मक शिक्षा ।
15. स्नेहलता कन्हैया लाल कृष्णदास, ब्रज लोक साहित्य का अध्ययनः, लहेरियासराय ।
16. मोहिनी झा 1991, मिथिलाक पावनि – तिहार, पटना ।
17. इन्द्र नारायण झा 1984, मिथिला दिग्दर्शन, हजारीबाग ।
18. उपेन्द्र झा 1983, मिथिला पुरी का अभिज्ञान ।
19. लक्ष्मीनाथ झा 1962, मिथिला की सांस्कृतिक लोक चित्रकला, ईलाहाबाद ।
20. राधाकृष्ण चौधरी, मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास, दरभंगा ।
21. रामचंद्र झा 1958, (सम्पा0) रूद्रधर कृत वर्षकृत्य, वाराणसी ।
22. राजबलि पाण्डेय 1957, हिन्दू संस्कार, वाराणसी ।
23. उपेन्द्र ठाकुर 1956, हिस्ट्री ऑफ मिथिला, दरभंगा ।
24. राधाकृष्ण चौधरी 1958, हिस्ट्री ऑफ बिहार, इलाहाबाद ।
25. आर0 आर0 दिवाकर 1959, (सम्पा०) बिहार थ्रू द एजेज, पटना ।
26. माखन झा 1982, सिविलाईजेशनल रिजन्स ऑफ मिथिला एण्ड महाकौशल, दिल्ली ।
27. डॉ. पी. आर. रूहेला, 1968, सम आस्पेक्ट ऑफ रिसर्च मेथेडोलॉजी, पिंगून ।
28. प्रो. क्यू. माटे, 1970, रिसर्च मेथड इन सोशल साइन्स ।
29. डॉ. पी.आर. रूहेला, 1968, सम आस्पेक्ट ऑफ रिसर्च मेथेडोलॉजी, पिंगून ।
30. प्रो. गुड एण्ड हॉट, 1981, इनफ्लूएन्स ऑफ स्टेटिसटिक्स ऑन रिसर्च, रिसर्चजरनल, न्यूयार्क ।
31. प्रो. श्रीमती यंग, 1985, रिसर्च मेथड एण्ड इटस एप्लीकेशन ।
32. प्रो. गुड एण्ड हॉट, 1981, इनफ्लूएन्स ऑफ स्टेटिसटिक्स ऑन रिसर्च, रिसर्चजरनल, न्यूयार्क ।
33. डॉ. पी.वी. यंग, 1988, एपलीकेशन ऑफ इनभेस्टीगेशन इन प्योर रिसर्च, न्यूर्याकं ।
34. प्रो. सी. एस. मोजर, 1991, अनुसंधान में निरीक्षण का महत्त्व, आगरा ।
35. प्रो. कोनोर, 1990, इम्पारटेन्स ऑफ टेबुलेशन इन रिसर्च, आक्सफोर्ड ।
36. आचार्य, द्विवेदी, रेवाप्रसाद : नाट्शास्त्र खण्ड–2, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, 2004
37. आचार्य, नंदकेश्वर : अभिनय दर्पण, चौखम्बा पब्लिशिंग, दिल्ली, 1989
38. राथ, रघुनाथ : नाट्यमनोरमा, उड़ीसा संगीत नाटक अकादमी, भुवनेश्वर, 1976
39. सातवेलकर, पं. श्रीपाद दामोदर, ऋग्वेद संहिता (अनुवाद), स्वाध्याय मण्डल पारडी नगरम्, चतुर्थ संस्करणम्, बलसाड प्रदेष, गुजरात प्रान्ते, 1987
40. अग्रवाल, डॉ. आर.ए. – कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन, नवीनसंस्करण, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ 2000
41.डॉ.विद्यासागर – आभार राजस्थान के वरिष्ठ कलाकारों का प्रलेखन, राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर